॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत-पत्रिका

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी अनुपम वाहिका

वर्ष—१७ संख्या—१-३ प्रबन्ध क्रमांक-१

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको समर्पित
एवं
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके
आदेश-निर्देश और प्रेरणानुसार

श्रीजगन्नाथाष्टकम्

(श्रीगौरचन्द्र मुखकमल-निःसृत)

कदाचित् कालिन्दीतट-विपिन-सङ्गीत-तरलो
मुदाभीरीनारी-वदनकमलास्वाद-मधुपः ।
रमा-शम्भु-ब्रह्मामरपति-गणेशार्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥१॥

जो कभी-कभी यमुनातीर स्थित श्रीवृन्दावनमें सङ्गीतसे लुब्धचित्त होते हैं, जो आनन्दपूर्वक व्रजगोपियोंके मुखकमलका आस्वादन करनेवाले भ्रमर-स्वरूप हैं तथा लक्ष्मी-शिव-ब्रह्मा-इन्द्र एवं गणेश आदि देवी-देवताओंके द्वारा जिनके श्रीचरणकमल पूजित होते रहते हैं, वे ही श्रीजगन्नाथ स्वामी मेरे नयनपथके पथिक बन जाएँ॥१॥

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरि-कटाक्षं विदधते।
सदा श्रीमद्वृन्दावन-वसति-लीलापरिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥२॥

जो बायें हाथमें वेणु, सिरपर मोरपँख, कटितटमें पीताम्बर एवं अपने नेत्रप्रान्तमें सहचरियोंके प्रति कटाक्ष धारणकर सर्वदा ही श्रीवृन्दावनमें वास एवं लीला करते हैं, वे ही श्रीजगन्नाथदेव मेरे नयनपथके पथिक बन जाएँ ॥२॥

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज-वलभद्रेण बलिना।
सुभद्रा-मध्यस्थः सकल-सुर-सेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥३॥

जो महासमुद्रके तीरपर सुवर्णके समान सुन्दर नीलाचलके शिखरमें अपने भवन[मन्दिर]में बड़ेभाई प्रबल बलदेवजीके साथ सुभद्राको बीचमें रखकर अवस्थान करते हुए समस्त देवताओंको अपनी सेवाका अवसर प्रदान करते हैं, वे ही श्रीजगन्नाथदेव मेरे नयनपथके पथिक बन जाएँ॥३॥

कृपा-पारावारः सजल-जलद-श्रेणि-रुचिरो
रामवाणीरामः स्फुरदमल-पंकेरुहमुखः।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखा-गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥४॥

जो करुणाके सगार हैं, जिनकी अङ्गकान्ति जलसे परिपूर्ण मेघश्रेणीके समान श्यामसुन्दर है, जो रमा तथा सरस्वतीदेवीके साथ विहार करनेवाले हैं, जिनका श्रीमुख विकसित निर्मल कमलके समान शोभायमान है, जो समस्त देवेन्द्रोंके आराध्य धन हैं तथा जिनका दिव्यचरित्र श्रुतियोंके शिरोभाग[वेद, पुराण, तन्त्रादि] गान कर रहे हैं, वे ही श्रीजगन्नाथदेव मेरे नयनपथके पथिक बन जाएँ॥४॥

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित-भूदेव पटलैः
स्तुति प्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥५॥

रथमें विराजित होकर गमन करते समय मार्गमें मिलनेवाले ब्राह्मणोंके द्वारा पग-पगपर की जानेवाली अपनी स्तुतियोंको सुनकर जो उनके प्रति दयासे युक्त हो जाते हैं, अतएव जो दयाके सिन्धु एवं समस्त जगत्के बन्धु हैं, समुद्र-कन्या लक्ष्मीदेवी सहित वे ही श्रीजगन्नाथदेव मेरे नयनपथके पथिक बन जाएँ॥५॥

परंब्रह्मापीडः कुवलय-दलोत्फुल्ल-नयनो
निवासी नीलाद्रौ निहित-चरणोऽनन्त-शिरसि।
रसानन्दी राधा-सरस-वपुरालिङ्गन-सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥६॥

जो आराध्य-मुकुटमणिस्वरूप परब्रह्म हैं, जिनके दोनों नेत्र नील-कमल-दलके समान खिले हुए हैं, जो नीलाचलमें निवास करनेवाले हैं, जो शेषजीके सिरपर

अपने चरणोंको स्थापित किए हुए हैं, जो प्रेमरसमें ही आनन्दमग्न होकर श्रीराधिकाके सरस-देहके आलिङ्गन-सुखमें ही सुख अनुभव करते हैं, वे ही श्रीजगन्नाथदेव मेरे नयनपथके पथिक बन जाएँ ॥६॥

न वै याचे राज्यं न च कनक-माणिक्य-विभवं
न याचेऽहं रम्यां सकल-जन-काम्यां वरवधूम्।
सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥७॥

मैं प्रसन्न हुए श्रीजगन्नाथदेवसे राज्य नहीं चाहता, सुवर्ण-मणि-माणिक्यरूप वैभवको भी नहीं चाहता तथा सभीके द्वारा वाँछनीय सुन्दरी नारीको भी नहीं चाहता हूँ, किन्तु यही मात्र चाहता हूँ कि प्रमथनाथ महादेव सर्वदा जिनके चारुचरित्रका गान करते रहते हैं, वे ही श्रीजगन्नाथदेव मेरे नयनपथके पथिक बन जाएँ ॥७॥

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते!
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते।
अहो दीनेऽनाथे निहित-चरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥८॥

हे सुरपते! आप मेरे असार-संसारको शीघ्र ही हर लो। हे यादवपते! आप मेरे दुःसहनीय पापोंकी श्रेणीको हर लो। अहो! जो दीन एवं अनाथके ऊपर ही अपने श्रीचरणोंको स्थापित करते हैं तथा यही जिनका निश्चित व्रत है, ऐसे श्रीजगन्नाथदेव मेरे नयनपथके पथिक बन जाएँ ॥८॥

जगन्नाथाष्टकं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः शुचि।
सर्वपाप-विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ॥९॥

जो व्यक्ति पवित्र एवं सावधान होकर पुण्यमय श्रीजगन्नाथाष्टकका पाठ करता है, वह व्यक्ति समस्त पापोंसे रहित विशुद्ध चित्तवाला होकर विष्णुलोकको गमन करता है ॥९॥

सुनिए श्रीजगन्नाथाष्टकम् – स्वामी भक्तिवेदान्त मुनि महाराज द्वारा गान एवं गीति-काव्य कृत।

श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाका संग्रह — पुराने अङ्कोंको डाउनलोड किजिए।

प्रस्तुति – श्रीश्रीभागवत-पत्रिका सेवक-मण्डली